॥ ओ३म्॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

# आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

**अनमोल वचन**

विष्णोः परमं पदमव भाति भूरि। *(यजु० ६.३)*

विष्णु का परम पद बहुत अधिक प्रकाशमान है।


वर्ष ३२, अंक २९ एक प्रति : ३ रुपये

सोमवार २० जुलाई, २००९ से २६ जुलाई, २००९ तक

विक्रमी सम्वत् २०६६ दयानन्दाब्द : १८६

सृष्टि सम्वत् १९६०८५३१०९ वार्षिक : १५० रुपये

फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

Website : www.delhisabha.com पृष्ठ सं. १ से १०


दिल्ली चलो! दिल्ली चलो!! दिल्ली चलो!!!

विश्व की समस्त आर्यसमाजों, एवं आर्य प्रतिनिधि सभाओं की शिरोमणि

## सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने पर

# शताब्दी अधिवेशन एवं महासम्मेलन

## 29-30 अगस्त, 2009 (शनिवार-रविवार)

## रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली

हजारों की संख्या में पहुंचकर इस ऐतिहासिक अवसर को सफल बनाएं।


विस्तृत कार्यक्रम पृष्ठ 5 पर


दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार विभाग के तत्त्वावधान में

## आर्य उपदेशकों की बैठक

**रविवार 26 जुलाई, 2009 सायं 4 बजे**

वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार को तीव्रगति प्रदान करने के लिए, महर्षि के दिव्य संकल्पों को तीव्रता से आकार प्रदान करने के लिए आपके अमूल्य अनुभवपूर्ण सुझावों की अत्यावश्यकता है। जैसे आप सुविज्ञों को विदित है कि श्रावणी उपाकर्म समीप ही है। इस अवसर पर कोई सार्थक प्रचार नीति, योजना होनी ही चाहिए। इस सन्दर्भ में वेदप्रचार विभाग, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने एक बैठक का निर्णय लिया। **बैठक की तिथि – 26 जुलाई 2009 (रविवार) को** सायं 4:00 बजे **आर्य समाज मंदिर, करोल बाग, नई दिल्ली** में आयोजित की गई है। अतः सभी माननीय उपदेशकों से प्रार्थना है कि निर्धारित समयानुसार पधार कर अपने अमूल्य परामर्श से आर्यत्व को लाभान्वित करें।

–: निवेदक :–

| विनय आर्य | आचार्य खुशीराम | कीर्ति शर्मा |
|---|---|---|
| महामन्त्री | अधिष्ठाता | प्रधान |
| दिल्ली आर्य प्र. सभा | वेद प्रचार वि., दिल्ली सभा | आ.स. करोल बाग |

जामिया मिलिया इस्लामिया में भी होगा वेद प्रचार

## दिल्ली बुक फैस्टिवल

**शनिवार 1 अगस्त से रविवार 8 अगस्त, 2009**

जैसा कि सभा की नीति रही है, सार्वजनिक मेलों मे अधिक से अधिक प्रचार किया जाए। इसी के अन्तर्गत सभा निम्न आयोजन करने जा रही है। हमारा उद्देश्य है अधिक से अधिक नए महानुभावों तक आर्यसमाज के साहित्य को पहुंचाया जाए। इस स्टाल पर चारों वेद, महर्षि दयानन्दकृत साहित्य, विभिन्न भाषाओं के सत्यार्थ प्रकाश तथा अन्य वैदिक साहित्य प्रचारार्थ बिक्री हेतु विशेष छूट के साथ रखा जाएगा। आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर इस कार्य में सम्बल प्रदान करें। हॉल एवं स्टाल नं. अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा। इस कार्य में जो स्वयंसेवी कार्यकर्ता सहयोग देना चाहें उनका हार्दिक स्वागत है। समयदानी कार्यकर्ता श्री सुखवीर सिंह आर्य 9350502175 से सम्पर्क करें।

– रमेशचन्द्र आर्य (9868242404) महेन्द्र सिंह आर्य

## अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन – 2009 सूरीनाम – 26 से 29 सितम्बर, 2009

दिल्ली में सम्पन्न हुए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन– 2006 के बाद में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आर्यसमाज में जो उत्साह आया उसी के परिणाम के अन्तर्गत अमेरिका में, मॉरीशस में विशाल आर्य महासम्मेलन सम्पन्न हुए हैं। उसी श्रृंखला में इस वर्ष का आर्य महासम्मेलन दक्षिण अमेरिकी देश सूरीनाम में विशाल स्तर पर आयोजित होने जा रहा है। जिसमें अनेक देशों के महानुभाव पुनः एकत्र होकर आर्यसमाज के आगामी कार्यक्रमों पर अपने विचार रखेंगे। 'सम्मेलन आयोजकों' द्वारा तय किया गया सम्मेलन का लक्ष्य है – ***Towards a Bright future : With respect and Dignity.*** इसी के साथ सम्मेलन के उप विषय भी निर्धारित कर दिए गए हैं। विस्तृत जानकारी एवं पूर्ण कार्यक्रम **www.delhisabha.com; www.mahasammelan2009suriname.org; www.aryamahasammelan.com** पर उपलब्ध है। – *राजेन खेदू, अध्यक्ष*


विस्तृत कार्यक्रम पृष्ठ 8 पर। सम्मेलन में भाग लेने वालों हेतु सूचना अगले अंकों में प्रकाशित होगी।

**दर्शन व्याख्या - 13**

# न्याय दर्शन के प्रथम अध्याय का परिचय

*गतांक से आगे :–*

**2. प्रमेय:** प्रत्यक्ष अनुमानादि प्रमाणों से जिन वस्तुओं को जाना जा सकता है उन्हें प्रमेय कहते हैं। न्याय दर्शन में बारह प्रमेयों का इन शब्दों में उल्लेख किया गया है– **'आत्मशरीरेन्द्रियार्थबुद्धिमन:प्रवृत्तिदोषप्रेत्यभावफलदु:खत्पवर्गास्तु प्रमेयम्।'** (न्याय०1/1/9) अर्थात् बारह ज्ञातव्य पदार्थ (प्रमेय) हैं – आत्मा, शरीर, इन्द्रिय, अर्थ, बुद्धि, मन, प्रवृति, दोष, प्रेत्यभाव (जन्म–मरण, पुनर्जन्म) फल, दु:ख और अपवर्ग (मोक्ष) ।

**3. संशय:** संशय का अर्थ है संदेह। किन्हीं दो वस्तुओं में सामान्य गुणों के मिल जाने पर भी विशेष धर्मों या गुणों के बारे में जो विप्रतिपत्ति (ऊहापोह–तर्क–वितर्क) उत्पन्न होता है, उसे संशय कहते हैं। उदाहरण के लिए किसी ऊँचे ठूँठ (स्थाणु) को देखकर मन में यह संदेह उत्पन्न होना कि यह ठूँठ है या पुरुष या इसी प्रकार रस्सी के टुकड़े में साँप का भ्रम उत्पन्न होना और तज्जन्य विप्रतिपत्ति (ऊहापोह) को संशय कहते हैं।

**4. प्रयोजन :** अपने इच्छितपदार्थ (आत्मानुकूल वस्तु या व्यक्ति) को प्राप्त करने या अनिच्छित वस्तु या व्यक्ति के परित्याग के लिए की जाने वाली प्रवृति (प्रयत्न) को प्रयोजन कहते है– ***यमर्थमधिकृत्य प्रवर्तते तत्प्रयोजनम्'*** (न्याय 1–1–24)

**5. दृष्टान्त :** यदि हम किसी उदाहरण के द्वारा अपने तर्कों या युक्तियों को प्रमाणित करते हैं तो उसे दृष्टान्त कहते हैं। दृष्टांत को लौकिक और परीक्षक समान रूप से स्वीकार करते हैं। याथातथ्य दृष्टान्त अंगीकृत सिद्धांतों की पुष्टि में सहायक बनता है तथा इससे प्रतिपक्षियों के सिद्धांतों का सहज ही खण्डन भी किया जा सकता है। न्याय दर्शन की शब्दावली में, ***"लौकिकपरीक्षकाणां यस्मिन्नर्थेबुद्धिसाम्यं स दृष्टान्त:।"*** (न्याय० 1/1/25)

**6. सिद्धांत :** युक्ति और प्रमाणों से सिद्ध तर्क को सिद्धांत कहते है। न्याय दर्शन के अनुसार सिद्धांत के तीन भेद हैं – 1. तन्त्र सिद्धांत 2. अधिकरण सिद्धांत और 3. अभ्युपगम सिद्धांत। तन्त्र सिद्धांत के भी दो प्रकार है – 1. सर्वतन्त्र सिद्धांत और 2. प्रतितंत्र सिद्धांत।

**7. अवयव:** अवयव का संबंध अनुमान प्रमाण से है। जिन पदार्थों या सिद्धांतों को अनुमान प्रमाण से सिद्ध किया जाता है, उनमें प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनयन और निगमन– इन पंच अवयवों का उपयोग किया जाता है, अर्थात् इन पंचावयवों के समुदाय को अनुमान कहते हैं। न्याय दर्शन में इन्हीं पाँच अवयवों का उल्लेख है (द्रष्टव्य: न्याय० 1/1/32 से 39तक), किन्तु कुछ अन्य नैयाकियों ने जिज्ञासा, संशय, शक्यप्राप्ति, प्रयोजन, और संशयाभ्युदास अर्थात् संदेह के उपाकरण का विचार – इन पाँच और अवयवों को मिला कर कुल दस अवयव माने है। (देखिए: न्याय दर्शन,भाष्यकार स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती, प्रकाशक– सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पृ.21)

*– डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया (डी.लिट्),*
*बी–3/79, जनकपुरी, न.दिल्ली–110058* *क्रमश:*

**Questions & Answers**

# Law of Karma

Readers are requested to send their questions to us relating to Vedas, Yoga, Yajna, Spiritual Topics and Current Affairs. Please go to **www.vedmandir.com.** You can also send them to "Arya Sandesh" Delhi Arya Pratinidhi Sabha, 15- Hanuman Road, New Delhi. - **Editor**

**Q.:** My question is regarding the karma law. How does it work? I have often heard that whatever we do we will be paid for our actions. **-Preeti**

**Ans.** : Whatever deed is done by a person, his action of deed never goes in vain. In this connection, Yajurveda mantra 7/48 states that a person is always free to do any deed i.e. pious deed or sin but result is awarded by Almighty God. There are three deeds (karms) sanchit, prarabdh and kriyaman. Suppose on soul has to take birth (body). It means he has to face total number of deeds of his all previous lives and these deeds are called to be faced in one life are called prarabdha (luck-destiny). So God has not made our luck at His own but Almighty God has taken the deeds which we have already done.

Yajurveda mantra 7/48 clarifies that being free to do any deed - good or bad but God only awards the result. Now the balance deeds from sanchit deeds will be counted in the next life. Now the deeds which we do in our day today present life are called kriyaman.

If we do pious deed according to Vedas , Shastras and holy books and based on pious preachings of Rishi, Muni/learned saints then our all sanchit deeds are burnt and we can get salvation. Human beings are free in the matter of doing deeds - good or bad. But result will be awarded by God. So we must worship and do pious deeds under the guidance of a learned Guru. One should go always ahead for hard working, pious deeds, worship to make future bright himself. One should always work towards a right path.

*To be continued....*

***देववाणी : संस्कृत***

# सर्वचिकित्सापद्धतीनाम् आयुर्वेदत्वम्

दु:खनिवारणे सुखप्रापणे च प्रवृत्ते प्रवर्तमाने प्रवर्त्स्यति चास्मिन् जगति रोगनिवारणावधानाम् आरोग्यरक्षणयत्न: च सहजतया दरीदृश्यमानं भवति खलु। तत: किमपि बह्वनुभूतं चिरानुभूतं यथेष्टफलसाधकं वैज्ञानिकं कारुणिकर्षिभि: प्रणीतं व्यवस्थितं शास्त्रं नितरां काम्यं भवति प्राणिनां, सर्वेषां तथाविधज्ञानार्जनस्य दुश्शक्यत्वात्, फलत: सर्वप्राणिनां रोगकष्टनिवारणाय कृतसमाधय: महर्षय: केषां न वन्द्या:? ते च हिमाच्छादितं नगाधिराजक्षेत्रं सोमलतादिभैषज्यानां खनिभूमिं परित: उपविश्य धर्मार्थ काममोक्षमूलोच्छेदकानां सर्वस्मादपि जगत: रोगराक्षसानां विनाशाय सदुपायचिन्तनं तदपायनिवारणं च चिन्तयामासु: तेनेदमायुर्वेद विज्ञानं समधिगतम् अस्माभि:।

दु:खं दु:खहेतु: सुखं सुखहेतुश्चेति सर्व: अर्थ: परिधिना परिहित:। एतावति अर्थविज्ञाने सर्वलोकस्य यावदर्थजातं समाविष्टं भवति बृहद्भाण्डे क्षद्रभाण्डवत्। आयुर्वेदशब्दस्य व्युत्पत्त्याऽपि सर्वोऽपि अर्थ: संगृहीत: भवति। तद्यथा– आयुरस्मिन् विद्यते अनेन वायुर्विन्दन्ति लभन्ते प्राणिन: अतो हेतोर्वायुर्वेद:। तथा च–

*हिताहितं सुखं दु:खमायुस्तस्य हिताहितम्।*
*मानं च तस्य यत्रोक्तमायुर्वेद: स उच्यते।।* (चरक 1/1/41)
इत्यपि लक्षणं संग्राह्यं भवति।
किमायुरिति जिज्ञासायां प्रोच्यते–
*शरीरेन्द्रियसत्वात्मसंयोगो धारि जीवितम्।*
*नित्यगश्चानुबन्धश्च पर्यायैरायुरुच्यते।।*
*तस्यायुष: पुण्यतमो वेदो वेदविदां मत:।*
*वक्ष्यते यन्मनुष्याणां लोकयोरुभयोर्हितम्।।* (चरक 1/1/42–43)

*– सुदर्शन 'व्रती', प्राध्यापक,*
*महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम, आमसेना (उड़ीसा)* *क्रमश:*

# जीवात्मा की कहानी

*– महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती*

*गतांक से आगे :–*

इस नगरी में आया है वह पुरंजन राजा – वह जीवात्मा और जब इस नगरी को छोड़कर निकला तो विदर्भ के राजा के नगर में जाकर एक कन्या के रूप में उत्पन्न हो गया। वह कन्या बहुत रूपवती और गुणवती थी। विदर्भ के राजा ने उसका नाम रखा– अपूर्व कन्या। वह बड़ी हुई तो मलयध्वज नाम के राजा के साथ उसका विवाह हो गया। दोनों सुख से रहने लगे। परन्तु एक दिन राजा मलयध्वज शीशे में अपना मुख देख रहे थे तो सिर में एक श्वेत केश दिखाई दिया। केश को देखकर वह अपूर्व कन्या से बोले– "रानी! मै तो अब जंगल में जाकर भगवान् का भजन करूँगा, तुम चाहो तो इस राज्य को चलाओ।"

रानी ने कहा– "आपके बिना मैं कैसे रहूँगी? जहाँ आप, वहीं मैं, मैं आपके साथ चलूँगी।"

दोनों वन में पहुँचे। आश्रम बनाकर रहने लगे। समय तो प्रत्येक स्थान पर व्यतीत होता है, वन में भी बीतने लगा। अन्तत: वह समय भी आया, जब मलयध्वज का देहान्त हो गया। रानी अपूर्व कन्या ने रो–रोकर अपना बुरा हाल कर लिया। वन में और कोई था नहीं। रोते पीटते उसने वन में से लकड़ियाँ एकत्रित कीं । एक चिता बनाई मलयध्वज की लाश को उसके ऊपर रख दिया। अपने हाथ से उसने चिता को आग लगाई। स्वयं भी उसमें बैठ गई। अग्नि प्रज्वलित हुई। चहुँ ओर लपटें फैलने लगीं। रानी अपूर्व कन्या अब भी रो रही थी। उसके क्रन्दन से वन गूँज रहा था। तभी उन लपटों में से आवाज आई– "पुरंजन! ओ पुरंजन!"

रानी ने आश्चर्य से इधर–उधर देखा, कोई भी उसे दिखाई नहीं दिया। परन्तु ध्वनि ने फिर कहा– "पुरंजन! रोना बन्द करो। तुम स्त्री नहीं हो, रानी नहीं हो, अपूर्व कन्या भी नहीं हो।"

रानी ने आश्चर्य से कहा– "तुम कौन हो, जो आवाज दे रहे हो?"

ध्वनि ने कहा– "पहले यह समझो कि तुम अपूर्व कन्या नहीं हो। तुम पुरंजन हो। कभी तुम पुरुष थे। अब स्त्री हो। वास्तव में तुम स्त्री पुरुष भी नहीं हो।"

रानी ने कहा– "और तुम कौन हो?"

ध्वनि ने कहा– "मैं तुम्हारा अज्ञात नाम वाला मित्र हूँ और मैं ही तुम्हारा मित्र हूँ, दूसरा कोई मित्र नहीं, कोई सम्बन्धी नहीं, कोई पति या पत्नी नहीं, पुत्र या पुत्री नहीं।"

तब उस पुरंजन ने अपने इस मित्र को पहचाना । तब उसने समझा कि अग्नि उसे जला नहीं सकती। इसके लिए, मलयध्वज के लिए या किसी भी आत्मा के लिए कोई मृत्यु नहीं और सबका मित्र वह एक है, जिसे लोग परमात्मा, प्रभु, ईश्वर, परमेश्वर, परम ब्रह्म, भगवान् शिव, शंकर, नारायण और कितने ही नामों से पुकारते हैं।

यह सारी जीवात्मा की कहानी है जो शरीर के साथ मिलकर कभी अपने आप को अपूर्व कन्या कहता है, कभी पुरंजन, कभी मलयध्वज, कभी विदर्भराज, कभी कुछ और। कई प्रकार के सहस्रों, लाखों, करोड़ों नाम वह अपनाता है, करोड़ों रूप अपनाता है।

गतांक से आगे

# मूर्तिपूजा तथा अवतारवाद के सम्बन्ध में कुछ प्रसिद्ध सन्तों के विचार - 5

मनुष्य सच्चे विद्वानों का सेवन तो नहीं करते और व्यर्थ में जड़मूर्तियों की पूजा करने लगते हैं। इस प्रश्न का उत्तर महात्मा तुकाराम जी स्वयं देते हैं और वही उत्तर जो भगवान् दयानन्द ने दिया था, जिसको सुनकर हमारे पौराणिक भाई एकदम चौंक पड़ते थे। क्या **'जड़ पूजूनि जड़ झाले'** ये लोग जड़मूर्त्तियों की पूजा करते करते स्वयं भी जड़ बन गये। और व्यर्थ में ही इस संसार में जन्म लेकर मर गये। पाठक देखें कि श्री तुकारामजी ने कितने जोरदार शब्दों में मूर्तिपूजा तथा अवतारवाद का खण्डन किया है, तथा स्वामी जी के प्रदर्शित वैदिक मन्तव्यों का समर्थन किया है।

अब पाठकों के सम्मुख महाराष्ट्र के एक और प्रसिद्ध संत के अवतारवाद तथा मूर्तिपूजा संबंधी विचारों को उपस्थित करता हूँ।

**5) समर्थ गुरु रामदास**

महाराष्ट्र में समर्थ गुरु रामदासजी एक उच्च कोटि के महात्मा हुये है। यह महात्मा छोटी आयु से ही विरक्त, ईश्वर के अनन्य भक्त तथा सच्चे महात्मा थे। महाराष्ट्र केसरी श्री शिवाजी के गुरु आप ही थे। आपने मराठी भाषा की ओवी नाम की कविता में 'दासबोध' नाम की एक पुस्तक लिखी, जिसका कई भाषाओं में अनुवाद भी हो चुका है। हम पाठकों की सेवा में मूल मराठी 'दासबोध' में से ही अवतार तथा मूर्तिपूजा संबंधी समर्थ गुरुरामदास के विचारों को उपस्थित करते हैं। पाठक, इन विचारों का ध्यान पूर्वक मनन करें।

**(मूर्तिपूजा)**

समर्थ गुरु रामदास जी 'दासबोध' के चौदहवें दशक के 'अखण्डध्यान' नाम प्रकरण में परमेश्वर को सर्वव्यापक समझकर प्राणीमात्र से प्रेम और परमेश्वर के पवित्र नाम को श्रद्धापूर्वक जप करना ही सच्ची भक्ति बतला कर आगे लिखते हैं– ***सहज सोडूंनि सायारा, हाचि होणी एक दोष।***

***आत्मा सोडूंन सायास, ध्यानी धरती। परितो धरिता हि घरबेना, ध्यानी येती व्यक्तिनाना। उगेचि कष्टाविति मना, कासाबीआस करूनी। मूर्ति ध्यान करिता साथसि तेथे एकचि एक दिसे। भासों नये तचि भासे, बिलक्षण।*** इत्यादि।

अर्थात् मनुष्यों में एक भारी दोष है कि वे परमेश्वर के उपर्युक्त सरल ध्यान को छोड़ कर अनात्मा अर्थात् जड़मूर्ति का ध्यान करने लग जाते हैं। किन्तु वास्तव में वे मूर्ति के द्वारा परमेश्वर का ध्यान कर ही नहीं पाते। क्योंकि मूर्ति का ध्यान करते समय इन लोगों को अनेक प्रकार की मूर्तियां दिखने लगती हैं, जो कि उपासक के मन को डांवाडोल कर व्यर्थ ही में उसे कष्ट देने का कारण बनती हैं। उपासक को कष्टदायक मूर्ति का ध्यान करते समय कुछ और का और दिखने लगता है। जिसका उस समय भान भी नहीं होना चाहिए, वह भी होने लगता है। जो कि उपासक के मन को चंचल और दुःखी बना देता है। पाठक देखें की श्री गुरु रामदास जी ने मूर्तिपूजा तथा उसके भक्ति में साधन होने का कितना स्पष्ट शब्दों में खंडन किया है। इस प्रकार के और भी मूर्ति के दोष बतलाते हुए समर्थ गुरु रामदास जी आगे पुनः लिखते हैं–

**(अवतारवाद)**

***देवतास देहधारी कल्पिती, तेथे नाना विकल्प उठती। भोगणे त्यागने विपत्ति योगे।***

*(दासबोध दशक 14, समास81)*

अर्थात् मूर्तिपूजकों के सम्मुख जहां अन्य बहुत सी कठिनाइयां उपस्थित होती हैं, वहां उन्हें परमेश्वर की भी देहधारी कल्पना करनी पड़ती है और परमेश्वर को देहधारी कल्पना करते समय उनके मन में अनेक संकल्प–विकल्प उठते हैं। सबसे प्रथम उनके मन में यह विचार उठता है कि यदि परमेश्वर ने शरीर धारण किया होगा तो उन्होंने किसी से द्वेष भी किया होगा। उनको अनेक आपत्तियों तथा दुःख भी भोगने पड़े होंगे, अर्थात् जो परमेश्वर किसी से राग और किसी से द्वेष करता है, और जिस परमेश्वर को अनेक दुःख तथा कष्ट उठाने पड़ते हैं, वह निर्विकार सच्चिदानन्द परमेश्वर कैसे? पाठक देखें श्री समर्थ गुरु रामदास जी ने ईश्वर के शरीरधारी होने अर्थात् अवतार लेने का कैसा युक्तियुक्त खंडन किया है।

श्री समर्थ गुरु रामदासजी दासबोध में एक अन्य स्थान पर मूर्तिपूजा के संबंध में इस प्रकार लिखते हैं–

**(मूर्तिपूजा)**

***पाषाणाचा देव केला,***  
***एक विदेशी भंगोनि गेला।***  
***तेण भक्त दुखतला,***  
***रडे पड़े आक्रंदे।।***  
***देव हारपला घरचे घरी,***  
***एक देव नेला चोरी***  
***एक देव दुराचारी,***  
***फोडिला बलें।।***  
***एक देव जापाणित्मा,***  
***एक देव उदकीं टाकला।।***  
***एक देव जापाणित्मा,***  
***एक देव उदकीं टाकला।।***  
***एक देव नेऊन घातला,***  
***पाया तली।***  
***काय सांगो तीर्थ महिमा,***  
***मोडोनि गेल दुरात्मा।।***  
***थोर सत्व होते ते मां,***  
***काय जाहलें कलेना।।*** इत्यादि।

*(दासबोध दशक 6 समास6)*

अर्थात् जब भक्त ने पत्थर का ईश्वर बनाया तो एकदिन किसी कारण वह टूट गया, इसको देख भक्त दुःखी होकर (हाय मेरा ईश्वर टूट गया कह कर) रोने और चिल्लाने लगा। इन मूर्तिपूजकों का ईश्वर तो घर के घर में ही खो जाता है। किसी ईश्वर को दुराचारी बलात् फोड़ देते हैं तो कोई ईश्वर छूने से भ्रष्ट हो जाता है। कोई ईश्वर पानी में फेंका जाता है, तो किसी ईश्वर को पांव के नीचे रोंदा जाता है। मैं इनकी तीर्थ महिमा का कहां तक वर्णन करूं, सार तो यह है कि मूर्तिपूजा से जो पवित्र तथा महान् आत्मा था, वह भी दुरात्मा ब कर कुमार्गगामी बन गया। हाय! कुछ पता नहीं चलता कि इस जीवात्मा को क्या हो गया। मेरे मूर्तिपूजक बन्धुओं! देखो कि समर्थ गुरु रामदास जी तुम्हारी इस मूर्तिपूजा से उत्पन्न हुई अधोगति पर कितना शोक प्रकट कर रहे हैं। क्या अब भी आप आत्मा को अधोगति की ओर ले जाने वाली मूर्तिपूजा का परित्याग नहीं करोगे? श्री गुरु रामदासजी ने मूर्तिपूजा की लचर बातों का इसके आगे और भी बहुत कुछ वर्णन किया है, किन्तु लेख के विस्तार के भय से उन बातों को छोड़कर केवल उनके अन्तिम वचन को पाठकों के सम्मुख उपस्थित करता हूँ।

***धातुपाषाण मृत्तिका, चित्र लेप काष्ठ देखा। तेथे देव कैंचा मूर्खा, भ्रान्ति पड़लो।।***

"हे मूर्ख! सोने–चांदी आदि की मूर्तियों में पत्थर मिट्टी और लकड़ी आदि की मूर्तियों में, तथा दिवारों पर निकाले चित्रों में परमेश्वर कहां? हे मूर्ख! तू तो भ्रम से इन जड़ पदार्थों तक की पूजा कर रहा हैं।" सुविज्ञ वाचक देखें कि श्री समर्थ गुरुरामदास जी ने कितने स्पष्ट शब्दों में पत्थर आदि की मूर्तियों को ईश्वर मानने से इन्कार किया है और मूर्तिपूजा को भ्रान्ति अर्थात् अविद्या बताया है। क्या इससे भी अधिक जोरदार तथा स्पष्ट शब्द मूर्तिपूजा तथा अवतारवाद के खंडन में मिल सकते हैं? ऐसी अवस्था में जबकि गुरु नानक साहिब, कबीर साहिब, योगीश ज्ञानेश्वर, संत तुकाराम, समर्थ गुरुरामदास जैसे प्रसिद्ध संत तथा महात्मा बड़े जोरदार शब्दों में मूर्तिपूजा तथा अवतारवाद का खंडन कर गये हैं, यह कहना कि 'ऋषि दयानन्द को छोड़कर अन्य किसी भी संत ने मूर्तिपूजा आदि का खंडन नहीं किया' कितनी भारी भूल है।

जो लोग यह कहते हैं कि जितने कठोर शब्दों में ऋषि दयानन्द ने मूर्तिपूजा आदि का खंडन किया है उतना और किसी संत ने नहीं, उन सज्जनों को भी यह लेख ध्यान से पढ़ना चाहिए और अपने हृदय पर हाथ रख कर विचार करना चाहिए कि क्या उपर्युक्त संतों से भी बढ़कर ऋषि दयानन्द ने मूर्ति पूजा तथा अवतारवाद का खंडन किया है। तुकाराम आदि संतों ने मूर्तिपूजकों को केवल मूढ़, अज्ञानी तथा मूर्ख तक ही नहीं अपितु पामर भी लिखा है, जैसा कि शायद ही ऋषि दयानन्द ने कहीं अपने ग्रन्थों में लिखा हो।

अन्त में मेरी मूर्ति आदि जड़ पदार्थों की पूजा करने वाले सज्जनों से प्रार्थना है कि वे इन सन्तों के वचनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और मूर्तिपूजा जैसे भगवान् की सच्ची भक्ति से वंचित रखने वाले तथा जाति में अनेकता उत्पन्न करने वाले कर्म का सर्वदा के लिए परित्याग कर तथा एक सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सच्चिदानन्द प्रभु की भक्ति से वंचित रखने वाले नाना मत–मतान्तरों को छोड़ एक पवित्र वैदिक धर्म की शरण लेकर अपने जीवन को पवित्र तथा सफल करें।

*संकलन : स्व० आचार्य भद्रसेन जी*

*लेखक के पुत्र– कैप्टन देव रत्न आर्य*  
*"वैदिक विहार" 28, वसंत विहार*  
*कॉलोनी, धोलाभाटा,*  
*अजमेर –305008 (राज.)*

# ब्रह्म–सूत्र द्वितीय अध्याय-द्वितीय पादः (41)

**अन्तवत्त्वमसर्वज्ञता वा ।। 41।।**

**अर्थ –** (अन्तवत्त्वम्) अन्त या विनाश वाला होना (असर्वज्ञता) असर्वज्ञ होना (वा) और।

(नोट – इस सूत्र में 35वें और 37वें सूत्र से क्रमशः 'न' और 'पत्युः पदों की अनुवृत्ति है।)

***भावार्थ*** – जगत् के स्वामी ब्रह्म को शरीर वाला मानना ठीक नहीं है क्योंकि उसे शरीरी मानने पर वह विनाशी व अल्पज्ञ होगा, अविनाशी व सर्वज्ञ नहीं।

ब्रह्म को शरीरी और इंद्रियों से युक्त मानने से वह अविनाशी व सर्वज्ञ नहीं रहेगा अपितु वह विनाशी, अन्तवाला और असर्वज्ञ यानी अल्पज्ञ होगा। क्योंकि जो शरीर से संबंधित होता है वह कभी न कभी उसका परित्याग भी अवश्य करता है। यह बात संभव नहीं हो सकती कि कोई शरीरधारी होता हुआ न शरीर को धारण करे और न परित्याग। शरीर के ग्रहण और परित्याग का मतलब ही विनाश है। यदि प्रकृति और जीवात्माओं का अधिष्ठाता परब्रह्म परमात्मा शरीरी हो तो वह भी अवश्य ही जीवात्माओं के समान शरीर का कभी ग्रहण और कभी परित्याग करने वाला होगा। ऐसी स्थिति में उसे विनाशी और अल्पज्ञ मानना पड़ेगा। तब उसकी स्थिति जीवात्मा के समान चेतन की सी हो सकती है, सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, जगत् नियन्ता ब्रह्म की नहीं। इसलिए जगत् के स्वामी ब्रह्म (ईश्वर) को शरीरधारी मानना युक्ति संगत नहीं है।

ब्रह्म को संपूर्ण संसार का संचालक एवं नियंता माना गया है । वेदादि शास्त्रों में उसके ऐसे स्वरूप का ही वर्णन पाया जाता है । यदि उसे शरीरी माना जाएगा तो वह एकदेशीय होगा। एकदेशीय होने पर वह सर्वज्ञ नहीं हो सकता। अतः ब्रह्म को शरीरी और इंद्रियों वाला मानना उसे विनाशी और अल्पज्ञ स्वीकार करना है और जो विनाशी और अल्पज्ञ हो, उसे परब्रह्म परमात्मा नहीं कहा जा सकता।

अतः सिद्ध होता है कि ईश्वर शरीरी और इंद्रियों वाला नहीं है।

अगले सूत्र में सूत्रकार इस विषय में और हेतु प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि जैसे ब्रह्म प्रकृति को जगत् के रूप में परिणत करता है। क्या उसी प्रकार जीवात्माओं को भी किसी उपादान तत्व से परिणत करता है?

***– डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'***  
***सी–2ए/90 जनकपुरी, नई दिल्ली–58***

**सार्वदेशिक सभा एकता प्रकरण**

## स्वामी अग्निवेश एवं श्री मिठाई लाल जी के पक्ष

# अखिर क्यों नहीं होने देना चाहते सार्वदेशिक सभा के निष्पक्ष चुनाव?

## जानें – आखिर क्या कार्य है तीन सदस्यीय जजों की समिति का

सार्वदेशिक सभा के चलते हुए प्रकरण में हमने गत सप्ताह यह जानकारी दी थी कि जो कमेटी सार्वदेशिक सभा के चुनाव करवाने हेतु कोर्ट द्वारा बनाई गई थी, उसके कार्यकाल को बढ़ाने के लिए कोर्ट ने अपना निर्णय सुरक्षित रख लिया था। दोनों पक्षों के वकीलों की बातों को सुनने के पश्चात् माननीय हाई कोर्ट के जज साहिबान ने अपना निर्णय देते हुए कै. देवरत्न आर्य जी के पक्ष द्वारा दी गई अर्जी पर नोटिस जारी करते हुए जवाब तथा प्रति जवाब के लिए दो माह का समय दिया तथा कोर्ट कमिश्नर्स की कमेटी की तिथि को अगले निर्णय आने तक समय बढ़ा दिया तथा अगली सुनवाई की तिथि 10 दिसम्बर, 09 रखी गई है।

### क्या कर रही है माननीय तीन जजों की समिति ?

माननीय न्यायालय ने सार्वदेशिक सभा के सभी पहलुओं पर विचार करते हुए यह निर्णय किया था कि आर्यसमाज सार्वजनिक हित की संस्था है। लोकतान्त्रिक नियम प्रणाली होने के कारण से इसके विवादों का हल केवल तभी सम्भव है जब नियम–उपनियमों के अनुसार सार्वदेशिक सभा का नया चुनाव सम्पन्न करा दिया जाए। इसके लिए यह आवश्यक था कि सार्वदेशिक सभा का निर्माण जिन 24 विभिन्न प्रान्तों से आने वाले प्रतिनिधियों द्वारा होता है, उनकी नई सूची तैयार की जाए। नई सूची तैयार करने के लिए आवश्यक था कि प्रान्तीय सभाओं के अधिकारियों को नियमानुसार नाम भेजने के लिए पत्र लिखा जाए। जब यह प्रश्न आया कि प्रान्तीय सभा से प्रतिनिधि भेजने का किन अधिकारियों को पत्र भेजा जाए तब अलग–अलग प्रतिनिधि सभाओं के अलग–अलग नाम सामने आने आरम्भ हो गए। यहीं से मुख्य विवाद आरम्भ होता है। हम दिल्ली का उदाहरण आपके समक्ष रखना चाहेंगे।

जब जजों की समिति के समक्ष दिल्ली का प्रश्न आया तो कै. देवरत्न आर्य जी के पक्ष ने कहा कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैध प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य, महामन्त्री श्री विनय आर्य हैं। किन्तु इस बात को गलत बताते हुए श्री मिठाई लाल जी के पक्ष द्वारा यह कहा गया कि दिल्ली सभाके वैध प्रधान वैद्य इन्द्रदेव तथा मन्त्री श्री नरेन्द्र आर्य हैं। ठीक इसी समय स्वामी अग्निवेश जी के पक्ष ने कहा कि ये दोनों ही गलत कहते हैं। दिल्ली सभा के असली प्रधान श्री ओमप्रकाश मान तथा महामन्त्री श्री बलजीत सिंह आदित्य हैं।

अब चुनावी प्रक्रिया में आगे बढ़ने के लिए यह फैसला करना जरूरी था कि तीनों ही पक्षों में से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के असली अधिकारी कौन हैं? इसका फैसला करने के लिए जजों ने तीनों ही पक्षों से कहा कि आप अपने समर्थन में उन सब कागजातों को जमा कराएं जिनसे आप अपने द्वारा बताए जाने वाले अधिकारियों को वैध सिद्ध कर सकें। इस आदेश पर तीनों ही पक्षों ने दिल्ली सभा के विषय में कागजात जमा करवा दिए। इस प्रकार अब माननीय न्यायधीशों को उन कागजों को देखकर तथा तीनों पक्षों की सुनवाई करके यह निर्णय करना था कि वास्तविक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैध अधिकारी कौन हैं। ठीक यही प्रक्रिया अन्य प्रान्तों के साथ भी अपनाई गई। जब कागजात जमा हो गए और माननीय जज साहिब एक–एक प्रान्त को लेकर निर्णय करने की स्थिति में आ गए तब इन दोनों ही पक्षों को एकता की बात याद आने लगी। और जिन स्वामी अग्निवेश का सिद्धान्त के आधार पर, कब्जेधारी प्रवृत्ति के आधार पर, कम्युनिस्ट होने के आधार पर, आज से 3 वर्ष पूर्व जबरदस्त विरोध किया जाता था, उनको आर्यसमाज से हटाने पर ही खाना खाने का व्रत लिया था, आज वे ही क्षुद्र स्वार्थों के कारण न केवल उनके साथ बैठ गए, बल्कि धारा 377 जैसे अत्यन्त संवेदनशील मुद्दे पर भी स्वामी अग्निवेश के खिलाफ एक भी शब्द नहीं बोल पा रहे हैं।

खैर, यह उनका विषय है – वही जानें। इस विषय में श्री कै. देवरत्न आर्य जी का पक्ष हमेशा ही स्पष्ट रहा है। उन्होंने प्रान्तों के वैध अधिकारियों की सूची को प्रकाशित किया है तथा आज भी उसी पर कायम हैं।

> ***आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपनी वसीयत लिखते समय जिन बिन्दुओं को लिखा वे उनकी भावना और इच्छा को भलीभांति दर्शाते हैं। और वे आज के परिपेक्ष्य में बहुत महत्वपूर्ण हैं। यथा – "यदि कभी कोई झगड़ा उठे तो उसको राजगृह में नहीं ले जाना चाहिए, किन्तु जहां तक हो सके यह सभा अपने आप उसका निर्णय करे। यदि आपस में किसी प्रकार निर्णय न हो सके तो फिर न्यायालय से निर्णय होना चाहिए।"***

चाहे वे श्री मिठाई लाल सिंह जी तथा श्री सुदर्शन शर्मा जी जैसे विरोधी क्यों न हों – उन्होंने कभी उन सभाओं की तदर्थ समितियां बनाने की व्यर्थ की कवायद नहीं की। केवल इस कारण से कि इससे आर्यसमाज का दीर्घकालीन हित सम्भव नहीं है। अब श्री मिठाईलाल सिंह एवं स्वामी अग्निवेश पक्ष जजों द्वारा चलाई जा रही इस प्रक्रिया को रोकने की निरन्तर कोशिश में लगे हैं और उन्होंने एक सम्मिलित प्रार्थनापत्र हाईकोर्ट में लगाया था कि केस हम वापस लेना चाहते हैं तथा इस समिति को समाप्त कर दिया जाए। किन्तु हाई कोर्ट ने उनकी नीयत को समझते हुए केस को वापस लेने के प्रार्थना पत्र को भी निरस्त कर दिया तथा समिति को समाप्त करने से भी इन्कार कर दिया। अब तीन जजों की समिति यह निर्णय करने में जुट गई है कि किस प्रान्त के वैध अधिकारी कौन हैं। उपरोक्त उदाहरण में जिस प्रकार से हमने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का केस रखा है – यह सारा संसार जानता है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैध अधिकारी कौन हैं? किन्तु श्री मिठाई लाल एवं स्वामी अग्निवेश झूठी एवं अवैध सभाएं हर प्रान्त में बनाकर संगठन को हमेशा उलझाए रखना चाहते हैं ताकि उन नकली सभाओं के बल पर वे अपने आपको सार्वदेशिक सभा का प्रधान कहते रह सकें। किन्तु आर्यसमाज इस बात को अपने नियमों में कहता है कि सच को सच मानने से ही विवाद का हल सम्भव है। यदि स्वामी सुमेधानन्द जी अथवा और अन्य महानुभाव इस सच को स्वीकार नहीं कर पा रहे हों तो दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा या अन्य और कोई भी प्रान्तीय सभा के वैध अधिकारियों को पहचानने का काम तीन जजों की समिति न करे तो कौन करे? परन्तु दोनों ही पक्ष बिल्कुल नहीं चाहते कि कोई यह फैसला करे कि किस प्रान्तीय सभा में कौन वैध प्रधान है और इसी कारण वे अपने आपको एक दिखाने का दिखावा मात्र कर रहे हैं। एक होने के लिए समान गुण, कर्म और स्वभाव आवश्यक हैं। परन्तु कहीं से कहीं तक भी ऐसा दीखता नहीं है। और जब कैप्टन देव रत्न आर्य जी का पक्ष इस बात के लिए कहता है कि तीन जजों की समिति का सहयोग करके इस निर्णय को जल्द से जल्द करवाया जाए, तब ये दोनों पक्ष कतई सहयोग करने को तैयार नहीं होते और उल्टा आरोप करते हैं कि कै. देवरत्न आर्य का पक्ष एकता नहीं चाहता। आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपनी वसीयत लिखते समय जिन बिन्दुओं को लिखा वे उनकी भावना और इच्छा को भलीभांति दर्शाते हैं। और वे आज के परिप्रेक्ष्य में बहुत महत्वपूर्ण हैं। ***"यदि कभी कोई झगड़ा उठे तो उसको राजगृह में नहीं लेजाना चाहिए, किन्तु जहां तक हो सके यह सभा अपने आप उसका निर्णय करे। यदि आपस में किसी प्रकार निर्णय न हो सके तो फिर न्यायालय से निर्णय होना चाहिए।" – महर्षि दयानन्द सरस्वती***

आशा है पाठकगण भली भांति यह समझ गए होंगे कि वास्तव में तीन सदस्यीय समिति किस आवश्यक कार्य को कर रही है तथा उस कार्य से किन गुटों का अस्तित्व समाप्त होगा। और जो लोग आज 'एकता–एकता' का राग अलाप रहे हैं, वे अचानक क्यों ऐसा कर रहे हैं?

**सत्यार्थ मुक्तक**

## सत्यार्थ प्रकाश से

***"स्वामी दयानन्द के विषय में मेरा मन्तव्य यह है कि वह हिन्दुस्तान के आधुनिक ऋषियों, सुधारकों और श्रेष्ठ पुरुषों में अग्रणी थे। उनका ब्रह्मचर्य, समाज सुधार, स्वातन्त्र्य स्वराज्य, सर्वप्रतिप्रेम, कार्यकुशलता आदि गुण लोगों को मुग्ध करते थे।"***

***– राष्ट्रपिता महात्मा गांधी***

"माता और पिता को अति उचित है कि गर्भाधान से पूर्व मध्य और पश्चात् दुर्गन्ध रुक्ष बुद्धिनाशक नशादि पदार्थों को छोड़ कर जो शान्ति, आरोग्य, बल, बुद्धि, पराक्रम और सुशीलता से सभ्यता को प्राप्त करे, वैसे घृत, दुग्ध, मिष्ट, अन्नपान आदि श्रेष्ठ पदार्थों का सेवन करें कि जिससे रज वीर्य भी दोषों से रहित होकर अत्युत्तम गुणयुक्त हों।" ***(द्वितीय समुल्लास)***

"बालकों को माता सदा उत्तम शिक्षा करे जिससे सन्तान सभ्य हों और किसी अंग से कुचेष्टा न करने पावें। जब वह कुछ कुछ बोलने और समझने लगे तब सुन्दर वाणी (की शिक्षा करे) और बड़े–छोटे, मान्य, पिता–माता, राजा, विद्वान् आदि से भाषण उनसे वर्तमान (व्यवहार) और उनके पास बैठने आदि की भी शिक्षा करे, जिससे कहीं उन का (सन्तान का) अयोग्य व्यवहार (अपयश आदि) न हो के सर्वत्र प्रतिष्ठा हुआ करे।" ***(द्वितीय समुल्लास)***

**मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न**

## श्री दलबीर सिंह राघव पुनः प्रधान निर्वाचित

*श्री दलवीर सिंह राघव*

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत सभी आर्यसमाज के लगभग 300 प्रतिनिधियों की उपस्थिति में सम्पन्न हुए चुनावों में सर्वसम्मति से श्री दलबीर सिंह राघव पुनः प्रधान निर्वाचित घोषित किए गए। इस अवसर पर मन्त्री के रूप में डॉ. जयपाल सिंह एवं कोषाध्यक्ष – श्री जयप्रकाश वर्मा निर्वाचित घोषित किए गए।

***दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से नवनिर्वाचित समस्त अधिकारियों को बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएं।***

दिल्ली चलो! दिल्ली चलो!! दिल्ली चलो!!!

विश्व की समस्त आर्यसमाजों, एवं आर्य प्रतिनिधि सभाओं की शिरोमणि

# सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

की स्थापना के 100 वर्ष पूर्ण होने पर

# शताब्दी अधिवेशन एवं महासम्मेलन

## 29-30 अगस्त, 2009 (शनिवार-रविवार)

## रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली

**प्रमुख कार्यक्रम**

**शनिवार दिनांक 29 अगस्त, 2009**

- ★ कार्यकारिणी बैठक
- ★ अन्तरंग सभा बैठक
- ★ सार्वदेशिक शताब्दी साधारण अधिवेशन
- ★ विशाल भजन संध्या

**रविवार दिनांक 30 अगस्त, 2009**

- ★ ऋग्वेद शतक महायज्ञ
- ★ ध्वजारोहण

**★सार्वदेशिक सभा शताब्दी महासम्मेलन ★**

**इस अवसर पर विभिन्न संगठनात्मक विषयों पर गोष्ठियां एवं चर्चाएं भी होंगी।**

**आप सब अधिकाधिक संख्या में उपस्थित होकर संगठन शक्ति का परिचय दें।**

-: निवेदक :-

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| कैप्टन देवरत्न आर्य<br>सभाप्रधान | आनन्दकुमार आर्य<br>कार्यकारी प्रधान | अनिल तनेजा<br>कोषाध्यक्ष | प्रकाश आर्य<br>सभामन्त्री | ब्र. राजसिंह आर्य<br>प्रधान, दिल्ली सभा |
| राधाकृष्ण वर्मा<br>उप प्रधान | सुरेशचन्द्र अग्रवाल<br>उप प्रधान | आचार्य बलदेव<br>उप प्रधान | सोमदत्त महाजन<br>उप प्रधान | धर्मपाल आर्य<br>प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा |

**सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, कैम्प कार्यालय - 15, हनुमान रोड नई दिल्ली-110001**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| स्वामी श्रद्धानन्द<br>महाराष्ट्र | स्वामी सुमेधानन्द<br>हिमाचल | दलबीरसिंह राघव<br>मध्य भारत | आचार्य दयासागर<br>छत्तीसगढ़ | सत्यवीर शास्त्री<br>मध्य विदर्भ | भारतभूषण गुप्ता<br>जम्मू-कश्मीर |
| विजय सिंह 'भाटी'<br>राजस्थान | लक्ष्मण यादव<br>झारखंड | देवेन्द्रपाल सिंह यादव<br>उत्तर प्रदेश | आचार्य रघुमन्ना<br>आन्ध्र प्रदेश | गंगा प्रसाद आर्य<br>बिहार | मिठाई लाल सिंह<br>मुम्बई |
| सुदर्शन शर्मा<br>पंजाब | देवराज आर्य<br>उत्तराखण्ड | हंसराज आर्य<br>आसाम | विशिकेशन शास्त्री<br>उड़ीसा | ज्ञान प्रकाश चोपड़ा<br>प्रादेशिक सभा | |

**प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के माननीय प्रधान**

## आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश का वार्षिक अधिवेशन

### रविवार 26 जुलाई, 2009 प्रातः 10 बजे

**स्थान : आर्यसमाज पश्चिमी पंजाबी बाग, नई दिल्ली**

आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश का वार्षिक अधिवेशन उपरोक्त रूप से आयोजित किया जा रहा है। अधिवेशन में गत वर्ष की गतिविधियों, आय–व्यय का वार्षिक विवरण एवं आगामी योजनाओं की रूपरेखा प्रस्तुत की जाएगी। दल से सम्बन्धित महानुभावों, सभी सभाओं के सदस्यों, अधिकारियों तथा सभी आर्यसमाजों के अधिकारियों से अनुरोध है कि आर्यसमाज की युवा इकाई के कार्यों से परिचित होने तथा इसके विकासात्मक कार्यों में सहयोग देने हेतु वार्षिक अधिवेशन में अवश्य उपस्थित हों।

*– सुन्दर आर्य, महामन्त्री*

### आर्य समाज झण्डी चौड़ (पूर्वी) कोटद्वार गढ़वाल के

## नव निर्मित भवन का उद्घाटन

आर्य समाज झण्डी चौड़ (पूर्वी) के नव निर्मित भवन का समारोह पूर्वक लोकार्पण किया गया।लोकार्पण पूर्व कैबीनेट मंत्री भी सुरेन्द्र सिंह नेगी द्वारा किया गया। समारोह का शुभारम्भ उपजिलाधिकारी कोटद्वार श्री गिरीश चन्द्र गुणवंत एवं आर्य समाज झण्डी चौड़ पूर्वी के वयोवृद्ध प्रधान श्री सरादू राम आर्य द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। सभा की अध्यक्षता आर्य समाज कोटद्वार के प्रधान श्री आनन्द प्रकाश आर्य व संचालन संयोजक श्री सुखदेव शास्त्री ने किया।

मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए ब्लॉक प्रमुख श्रीमती गीता नेगी ने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने विधवा विवाह का समर्थन, सती प्रथा का विरोध, नारी शिक्षा व समान अधिकार आदि महत्वपूर्ण कार्य कर नारी जाति की उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया।

मुख्य अतिथि माननीय श्री सुरेन्द्र सिंह नेगी ने कहा कि "महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज विश्व कल्याण की संस्था है, जो गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार व्याख्या कर वेदों की ओर लौटनें का आह्वान करता है, जो मानव को सर्वांगीण विकास की ओर ले जाता है, संस्कारवान् बनाता है, उन्होंने संस्कार की व्याख्या करते हुए कहा कि स्वयं में विद्यमान दुर्गुणों को समाप्त कर उनके स्थान पर सद्गुणों को प्रत्यारोपित कर दें, यही संस्कार हैं।

सभा को ग्राम प्रधान रामेश्वरी देवी, (झण्डीचौड़ पूर्वी), डा. मंगलदेव ध्यानी, भगत राम शिल्पी, कान्ति प्रकाश, गिरधारी लाल जमोली, मोहन सिंह भारती, रामपाल सिंह, लखन लाल, ओम प्रकाश, भारत सिंह रावत, अनिल बतरा, सरादू राम आर्य आदि ने सम्बोधित किया।

*– सुरेन्द्र लाल आर्य, प्रधान*
*गढ़वाल आर्य उप प्रतिनिधि सभा*
*आर्य समाज लेन, पदमपुरी*
*सुखरौ कोटद्वार (गढ़वाल)*

**महर्षि दयानन्द सरस्वती**
जीवन चरित्र, घटनाओं तथा ग्रन्थों की जानकारी के लिए लॉगऑन करें
**www.swamidayanand.com**

**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**
कार्य एवं गतिविधियों को जानने के लिए लॉगऑन करें
**www.delhisabha.com**

**समस्त विद्यालयों एवं विद्यार्थियों को उत्कृष्ट परिणामों हेतु हार्दिक शुभकामनाएं**

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा
समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

**नैतिक शिक्षा की पुस्तकें**

नर्सरी कक्षा से 12वीं कक्षा तक

**आकर्षक छूट 20%**

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों को नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। आर्य विद्या परिषद् द्वारा प्रकाशित कराई गई नैतिक शिक्षा की ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
☎ : 23360150; Email : aryasabha@yahoo.com

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 125वें निर्वाण वर्ष पर
स्वामी सत्यानन्दकृत महर्षि दयानन्द जीवनी

**श्रीमद्दयानन्द प्रकाश**

~~रु. 200~~ मात्र 125/-रु०

सुन्दर कम्पोजिंग, आकर्षक रंगीन कवर, बड़ा साईज 450 पृष्ठों में
यह छूट महर्षि निर्वाणोत्सव (दीपावली) तक ही मान्य होगी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का अमर ग्रन्थ

**सत्यार्थ-प्रकाश**

प्राप्त करें मात्र 25/- में
(2500/- रुपये सैंकड़ा)
सुन्दर कम्पोजिंग, आकर्षक रंगीन कवर में प्रकाशित

**चारों वेदों का सम्पूर्ण वेद-भाष्य**

(हिन्दी 4 व 14 खण्डों एवं दो विभिन्न आकारों में)
मात्र 1500/-रु०

(अंग्रेजी 22 खण्डों में)
मात्र 2000/-रु०

आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं, दैनिक हवन कर्ताओं के लिए खुशखबरी

**MDH हवन सामग्री**

अब सभा कार्यालय में भी उपलब्ध

अनेक जड़ीबूटियों व औषधियों से तैयार सुगन्धित हवन सामग्री अब दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में 5, 10 एवं 20 किलो के पैक में उपलब्ध है। आर्यसमाजें अपनी आवश्यकतानुसार मंगाएं और विशुद्ध हवन सामग्री से यज्ञ करके वातावरण को सुगन्धि प्रदान करें।

5 किलो - 250 रुपये तथा 10 किलो - 490 रुपये

आर्यजनता की भारी मांग पर सभा द्वारा पुनः प्रकाशन

**शगुन लिफाफे**

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित
छह सुन्दर डिजाइनों में
केवल मात्र 200/- रुपये सैंकड़ा

आर्यजन अधिक से अधिक संख्या में मंगाकर आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में सहयोगी बनें। आज ही अपने आर्डर भेजें।

सार्वदेशिक सभा के शताब्दी वर्ष समारोह पर
सभा प्रधान कै. देवरत्न आर्य की घोषणा

**महर्षि दयानन्द सरस्वती** (कॉमिक्स)

भारत में कहीं भी 500 से अधिक प्रतियां मंगाने पर डाक व्यय नहीं लिया जाएगा। अधिक से अधिक संख्या में मंगवाकर प्रचार करें।
योजना मात्र 31 अगस्त, 2009 तक मान्य। मूल्य : 12/-

प्राप्ति-स्थान : - **वैदिक प्रकाशन**, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001; दूरभाष : 011-23360150, 23343737

125वें निर्वाण वर्ष पर आयोजित आर्य प्रतिनिधि सभाओं के आयोजन

## गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का

# प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

### 12–13 सितम्बर, 2009 : अहमदाबाद

**आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर सम्मेलन को सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान करें।**

–: निवेदक :–

| सुरेशचन्द्र अग्रवाल | परशुराम भाई आर्य | पूनमचन्द्र नागर |
|---|---|---|
| प्रधान | मन्त्री | कोषाध्यक्ष |

## छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

# प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

### 9 अक्तूबर से 11 अक्तूबर, 2009

**स्थान : घनश्याम सिंह आर्य कन्या महाविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)**

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर संगठन शक्ति का परिचय दें तथा सम्मेलन को सफल बनाने में अपना योगदान देवें।

–: निवेदक :–

| आचार्य दयासागर | दीनानाथ वर्मा | अरुण खोसला |
|---|---|---|
| प्रधान | मन्त्री | कार्यालय मन्त्री |

# अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

## गुरु–शिष्य के प्रथम मिलन के 150वें वर्ष पर

## 6,7,8 नवम्बर, 2009 : मथुरा

**उद्घाटन : 6 नवम्बर, 2009 प्रातः 10 बजे**

**मुख्य अतिथि : महामहिम राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटील**

19वीं सदी के महान् सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म गुजरात के टंकारा ग्राम में हुआ। विरक्ति होने पर घर परित्याग के बाद निरन्तर 13 वर्षों तक भारतवर्ष के विभिन्न दुर्गम तीर्थस्थलों में भ्रमण करते रहे, परन्तु सच्चे शिव के दर्शन करवाने वाला योग्य गुरु नहीं मिला। अन्त में 4 नवम्बर बुधवार (कार्तिक शुक्ल 2) सन् 1860 को स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पावन नगरी मथुरा में वेद और व्याकरण के प्रकाण्ड विद्वान् प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी गुरु विरजानन्द सरस्वती की कुटिया का द्वार खटखटाया और श्रीचरणों में रहकर शिक्षा–दीक्षा प्राप्त की।

मथुरा में महान् गुरु और महान् शिष्य के प्रथम मिलन का 150वां वर्ष आरम्भ हो रहा है। आर्यजगत् के लिए यह गौरवशाली, प्रेरणादायक वर्ष है। आर्यों ने इस अवसर पर 6, 7, 8 नवम्बर, 2009 को मथुरा में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन करने का निर्णय किया है। 8 नवम्बर को महासम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी रामदेव जी करेंगे। **आर्यजन अभी से तैयारियां आरम्भ करें और अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर प्रथम मिलन के 150वें वर्ष को एक यादगार के रूप में अपने हृदयों में अंकित करें।**

**दिल्ली से जाने के लिए विशेष व्यवस्थाएं की जाएंगी। आर्यजन अधिकाधिक संख्या में सम्मिलित होने के लिए अभी से तैयारियां आरम्भ करें।**

**आयोजक :– गुरु विरजानन्द ट्रस्ट, वेद मन्दिर, मसानी चौक, मथुरा (उ.प्र.)**

**Email : virjanandtrust@yahoo.in, virjanandtrust@gmail.com**

## प्रचार यात्रा वृत्तान्त

### डॉ. उत्तमायति जी की वेद प्रचार यात्रा – 6

## द० तथा उ० अमेरिका के देशों में कर रहीं हैं प्रचार

*गतांक से आगे :–*

हम कार्यक्रम देकर आते फिर रिकार्डिंग रूम में मेरे भजनों की सी.डी. तैयार करते और कलाकारों को बुलाते जैसे तबला प्लेयर, सिन्थेसाइजर, पेड। इस प्रकार दो महिनों में 5 सी.डी. तैयार की। आप विश्वास नहीं करेंगे कि करीब एक महीने में ही हजार सी.डी. से ऊपर बिक गई। डॉ० सुग्रीव तैयार करते जाते, सी.डी. का कवर पेज आदि भी सब उन्होंने अपने घर में कम्प्यूटर पर ही तैयार किये। वह और उनकी पत्नी पार्वती मिलकर रोज सी.डी. तैयार करते। फिर पैक करते और चल देते कार में रखकर अगले प्रोग्राम पर।

डेढ़ महीना मैं डॉ. सुग्रीव के घर ही रही। बहुत ही प्यार से वह समय व्यतीत हुआ। मैंने कई बार भारतीय ढ़ंग से सब्जियां व भोजन बना कर भी खिलाया, जो सबको बहुत अच्छा लगता था। एक बार बहनें पीछे पड़ गई कि आप खाना बहुत अच्छा बनाती हो, एक दो कुकिंग क्लासेज भी लें, फिर चार बार कुकिंग क्लासेज भी ली। गुयाना का खाना बहुत साधारण है।

वहां सब कहते थे – You are a good Pracharak, good singer, good photographer, good cook, good educationist, every thing is excellent. इस प्रकार गुयाना में 7 महीने, विशेषकर बर्बीज प्रान्त में बहुत ही अच्छे व यादगार दिन रहे। जब भी एक स्थान के बाद दूसरे स्थान पर जाती थी तो व्यक्ति बेहद भावुक हो जाते थे– "Please don't go back, We will miss you."

22 से 29 अक्टूबर तक सूरीनाम की यात्रा पर गई। वहां भी मेरे साथ पहले दिन भाई डॉ. सुग्रीव, बहन शान्ता, हमारा तबला प्लेयर रवि गये। दिन में करीब एक बजे सुरीनाम पहुँचे और चार बजे रेडियो स्टेशन पर कार्यक्रम देने पहुंच गये जो उन्होंने पहले से ही तय कर रखा था। एक घंटा मेरा प्रवचन और भजन डाइरेक्ट रिले किया। बहुत अच्छा लगा। मैंने भी एक वेद मंत्र 'ओं पावमानी पुनातु मा कृत्वा दक्षाय जीवसे, अथो अरिष्टतातये। (अथर्व) की व्याख्या की तथा दो भजन मैंने तथा डॉ. सुग्रीव ने बोले। धाराप्रवाह हिन्दी में जब बोल रही थी तो सब मेरी शक्ल देख रहे थे। कार्यक्रम के बाद सभी बोले वाह! हिन्दी में तो आप नॉन स्टाप बोलती हैं।

वहां भी पूरे सप्ताह सूरीनाम के विभिन्न आर्य समाजों में रोज शाम की योग कक्षा फिर सत्संग का कार्यक्रम चलता रहा। 27 ता: को वहां के उपराष्ट्रपति जी से मिले।

करीब 40 मिनट तक उनके ऑफिस में उनसे चर्चा हुई। बहुत ही सज्जन और विद्वान् व्यक्ति थे। उन्होंने पूछा आप किस मकसद को लेकर भारत से आई हैं ? मैंने उत्तर दिया – वैदिक धर्म का प्रचार, शांति का संदेश, समाज से कुरीतियां व अंधविश्वास को समाप्त करने के उद्देश्य से आई हूँ। वर्तमान परिस्थितियों पर भी चर्चा होती रही। दूसरे दिन वहां के समाचार पत्रों में इस वार्तालाप की खबरें थीं। – ***क्रमशः***

### आचार्य ज्ञानेश्वर जी की दक्षिण अफ्रीका में

*गतांक से आगे :–*

वर्तमान में दक्षिणी अफ्रिका के बड़े नगर और कहें तो आर्थिक राजधानी जोहांसबर्ग में विभिन्न संस्थानों में प्रचार, कथा, उपदेश, शंका–समाधान, प्रेरणा आदि कर रहा हूँ।

यहां की जनसंख्या लगभग पांच करोड़ है, जिसमें 4 करोड़ से भी अधिक यहां के मूल निवासी काले हैं। शेष 1 करोड़ में यूरोपीय गोरे, जो 30–40 लाख होंगे, ऐशियायी लगभग 13 लाख हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो काले व गोरों के संयोग से पैदा हुए हैं, जिन्हें 'कलर्ड' कहते हैं। भाषायें बहुत हैं, किन्तु मुख्य अंग्रेजी तथा अफ्रिकन हैं। अधिकांश व्यक्ति मद्य, मांस, नृत्य का सेवन करने वाले हैं। धर्म की दृष्टि से अधिकांश, ईसाई हैं, किन्तु अब तीव्र गति से मुस्लिम मत वाले बनते जा रहे हैं।

यहां के कृष्ण वर्णों मूल निवासी अब पिछले कुछ वर्षों से शिक्षा आदि की समुचित व्यवस्था होने से कुछ शिक्षित सभ्य, बुद्धिमान् व्यक्ति अनेक विभागों में उच्च पदों पर भी नियुक्त हो रहे हैं। किन्तु अभी भी भारतीय दृष्टि से कठोरता, अशिष्टता, असभ्यता, अभाव आदि प्रचुरमात्रा में दृष्टिगोचर होता है। यूरोपीय गोरे लोग अभी भी यहां पर सम्पन्न, वर्चस्व तथा प्रभुत्व वाले हैं, किन्तु असुरक्षित वे भी मानते हैं। ऐसी ही स्थिति भारतीयों की है, किन्तु बाहर के मुस्लिम भाई सशक्त, सुसंगठित हैं तथा अपना प्रभुत्व बढ़ा रहे हैं। लगता है भविष्य इनका है। इनकी अपने धर्म के प्रति श्रद्धा निष्ठ है।

आर्य समाज, हिन्दु मतपंथ संप्रदायों की स्थिति दयनीय सी ही कही जा सकती है। या तो ये मूर्छित हैं, या अकर्मण्य हैं, या फिर वृद्धत्व को प्राप्त। आशा, उत्साह, पराक्रम, त्याग, तप, संगठन,धन, बल, योजना, प्रेरणा के अभाव में मात्र ये विगठन, असहयोग, सुदृढ़ नेतृत्व के अभाव के कारण मृत प्राय: भी कहे जा सकते हैं। स्वार्थी, लोभी, लालची, ऐषणाओं की पूर्ति करने वाले गुरु, सन्त, आचार्य, बापू, कुछ दिनों के लिए यहां पर आकर अपनी अपनी डुगडुगी बजाकर तमाशा दिखाते हैं और वक्ता–श्रोता दोनों अपने को धन्य मानकर कृत कृत्य सा अनुभव करते हैं।

ईसाईयों, मुसलमानों की तरह अन्यों को अपने श्रेष्ठधर्म वाले मत का अनुयायी बनाने की बात तो दूर रही अपने सिद्धान्तों, भाषा, भूषा, भोजन, भजन, भक्ति, भगवान् से भी उन्हें जोड़े रखने में असमर्थ हो रहे हैं। नैतिक मूल्य, मानमर्यादा, अस्मिता, वर्चस्व लुप्त प्राय: होते जा रहे हैं। मैं इस पतन की पराकाष्ठा की शोचनीय स्थिति तथा इसके दुष्परिणामों को दर्शाता हूँ तथा इसके सुधार के क्या वैदिक (तात्कालिक) उपाय व साधन हैं यह स्पष्टता के 'बिना किसी भय तथा संकोच' के बताता हूँ। प्रचार यात्रा में ब्र० दिनेश जी साथ हैं तथा मान्य श्रीयुत दयानन्द जी शर्मा इस यात्रा की व्यवस्था कर रहे हैं। अभी तो अनेक देशों तथा नगरों में घूमना है। शेष वर्णन आगे करूंगा।

***– ज्ञानेश्वरार्य:***

***सैंडटोन हिन्दू समाज, जोहांस्बर्ग, (दक्षिण अफ्रीका)***

गुरुकुल कांगड़ी पुण्यभूमि हस्तांतरण सम्बन्धी प्रकरण

# पंजाब के आर्यजनों अब तो जागो! नहीं तो समाप्त हो जाएगी स्वामी श्रद्धानन्द की स्मृति

## भूमि के हस्तांतरण का पूर्ण विरोध करेगा आर्यसमाज

आर्यसन्देश के दो अंक पूर्व हमने आर्यजनता को यह जानकारी दी थी कि स्वामी श्रद्धानन्द जी की तपोभूमि कांगड़ी ग्राम हरिद्वार में स्थित वह भूमि जिस पर प्रथम गुरुकुल की स्थापना की गई थी, एक षड्यन्त्र के तहत आर्यसमाज के हाथों से गंवा देने का कार्य हो रहा है। और उस षड्यन्त्र में कोई बाहरी व्यक्ति नहीं बल्कि बाड़ के रूप में रक्षा करने की जिम्मेदारी निभा रहे, कुलपति प्रो. स्वतन्त्र कुमार ही प्रमुख हैं। हैरानी की बात यह है कि यह सबकुछ पता लगने के बाद भी कुलाधिपति श्री सुदर्शन शर्मा की तरफ से इस सम्बन्ध में कोई आधिकारिक बयान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की पत्रिका अथवा गुरुकुल पत्रिका में नहीं छपा है।

गत दिनों आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान आचार्य बलदेव जी एवं दिल्ली सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य जी के साथ अनेक आर्यजन हरिद्वार पहुंचे तथा इस सम्बन्ध में प्रैस वार्ता की। जिसमें सरकार को चेतावनी भी दी गई कि समाज की इन सम्पत्तियों को किसी भी प्रकार से लेने की कोशिश न करें। इसको वापस लेने के लिए आर्यसमाज किसी भी आन्दोलन को करने से पीछे नहीं हटेगा। जिस दिन यह समाचार हरिद्वार के अखबारों में प्रकाशित हुआ, उसी दिन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का भी वक्तव्य प्रकाशित हुआ जिसका अर्थ यह था कि "यदि पुरातत्व विभाग उस जमीन को वापस देना चाहे तो आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को कोई आपत्ति नहीं है।" पाठक स्वयं समझ सकते हैं कि प्रो. स्वतन्त्र कुमार के षड्यन्त्र में स्वयं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब भी पूरी तरह सम्मिलित है।

### निर्वाचन समाचार

**रामगली आर्यसमाज हरि नगर घंटाघर, नई दिल्ली**

प्रधान : श्री ओमदत्त गौतम
मन्त्री : श्रीमती राजेश्वरी आर्या
कोषाध्यक्ष : श्री सुभाष मल्होत्रा

**उत्तरी प. दिल्ली वेद प्रचार मंडल**

प्रधान : श्री भजन प्रकाश आर्य
मन्त्री : श्री दुर्गा प्रसाद कालरा
कोषाध्यक्ष : श्री ब्रतपाल भगत

**आर्यसमाज यमुना विहार, दिल्ली**

प्रधान : श्री रामस्वरूप शास्त्री
मन्त्री : डॉ. सुबोध कुमार शर्मा
कोषाध्यक्ष : श्री वीर बहादुर ढींगरा

**आर्यसमाज महावीर नगर, नई दिल्ली**

प्रधान : श्री तेजभान आर्य
मन्त्री : श्री दिनेश आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री राजपाल आर्य

**आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर (राजस्थान)**

प्रधान : श्री उदय शंकर व्यास
मन्त्री : श्री महेशचन्द्र सोनी
कोषाध्यक्ष : श्री नरसिंह सोनी

**आर्य वेद प्रचार मंडल मेवात**

प्रधान : श्री पदमचन्द आर्य
मन्त्री : श्री ज्ञान चन्द
कोषाध्यक्ष : श्री सुनील कुमार

**आर्यसमाज भीलवाड़ा (राजस्थान)**

प्रधान : श्री विजय शर्मा
मन्त्री : श्री भीमसिंह रावत
कोषाध्यक्ष : श्री द्वारका प्रसाद पण्डया

### आर्य संस्थाएं एवं आर्यसमाजें वेद प्रचार विभाग का सहयोग लें

आपको विदित हो कि सभा के अन्तर्गत वेद प्रचार विभाग में 20 उच्च कोटि के विद्वान् अपनी सेवाएं दे रहे हैं। वे बृहद् यज्ञ, शतक यज्ञ, एवं वार्षिक उत्सवों में दिल्ली तथा आस–पास के क्षेत्रों में वेद प्रचार में संलग्न हैं। आगामी वेद प्रचार सप्ताह हेतु अथवा विशेष कार्यक्रम में आप उनकी सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं। आचार्य खुशीराम जी वेद प्रचार अधिष्ठाता के रूप में कार्य कर रहे हैं। सभा कार्यालय एवं आचार्य जी से सम्पर्क कर लाभ उठाएं।

*– आचार्य खुशीराम, फोनः 25708873*


**ARYA FINANCIAL**

**An Investment Advisory Co.**

**Life Insurance**
**Mutual Fund**
**General Insurance**
**Tax Planning**

* LIC का पेंशन प्लान अपनाएं, बुढ़ापा मजबूर नहीं मजबूत बनाएं। ★ बच्चों की शिक्षा कैरियर शादी आदि का इन्तजाम करें छोटी बचत में बड़ा काम करें। *Make our child Crorepati, Get Rs. 1.25 Crore by investing Just Rs. 2000/-* P.M. only for 25 Years (SIP in Mutual Fund) * ELSS द्वारा निवेश करें टैक्स बचाए साथ ही अधिक मुनाफा कमाएं। ★ अपनी व अपने परिवार की हैल्थ इंश्योरेंश (मेडीक्लेम) कर अचानक होने वाली बीमारी के खर्च से बचें। ★ सभी प्रकार के Mutual Fund में निवेश की सुविधा। ★ निवेशक होने के लिए धनवान होना आवश्यक नहीं किन्तु धनवान होने के लिए निवेशक होना जरुरी है।

**Dharamvir Arya (Financial Advisor)**
(Certified IRDA & AMFI)
Off. LIC 33B, Distt. Centre, Janak Puri, New Delhi -58, Mob. 9810216281
Email: aryalic2007@rediffmail.com


## अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन – 2009 सूरीनामः विस्तृत कार्यक्रम

**26 SEPTEMBER, 2009 (SATURDAY)**

REGISTRATION : 10 am - 1 pm, 4 pm - 6 pm
RECEPTION : 6 pm - 8pm

**27 SEPTEMBER, 2009 (SUNDAY)**

YOGA AND MEDITATION : 6 am - 6.30 am
FLAG HOISTING CEREMONY : 6.30 am - 7 am
YAJNA : 7 am - 8 am
BREAKFAST : 8 am - 9.30 am
REGISTRATION : 10 am -1pm

**INAUGURATION CEREMONY** : 11am - 2 pm
**OPENING BY THE VICE PRESIDENT OF THE REPUBLIC SURINAME**
***THEME : RELIGION & POLITICS/ CONTRADICTORY OR SUPPLEMENTARY***
LUNCH : 2pm - 3pm
SHOBHA YATRA (PARADE) : 4pm - 6pm
VED YAJNA : 7pm - 9pm
DINNER AND SANGEET : 9pm - 10pm

**28 SEPTEMBER, 2009 (MONDAY)**

YOGA AND MEDITATION : 6 am - 6.30 am
FLAG HOISTING CEREMONY : 6.30am - 7 am
YAJNA : 7am - 8 am
BREAKFAST : 8am - 9 am

**SAMMELAN** : 9.30 am - 11.30 am
***THEME : 3RD PRINCIPLE OF ARYASAMAJ/ SHOWING THE WORLD THE RIGHT WAY, AN ANALYSIS OF THE 3RD PRINCIPLE***

**SAMMELAN** : 11.30 am - 1 pm
***THEME : CODE OF ETHICS IN POLITICS/ THE CONTRIBUTION OF THE VEDAS***
LUNCH : 1pm - 2pm

**SAMMELAN** : 2 pm - 4.30 am
***THEME : VEDAS & EDUCATION: GURUKUL SYSTEM/ HOW TO RAISE CITIZENS FOR A GOOD & BETTER COMMUNITY (2ND MILLENNIUM DEVELOPMENT GOAL) SANSKAR CONCEPT: THE IMPORTANCE OF VALUES AND NORMS (THE ROLE OF THE DEPARTMENT OF EDUCATION)***
TEA BREAK : 4.30 pm - 5.30pm
SANGEET : 5.30pm - 6pm
VED YAJNA : 7pm - 9pm
DINNER AND SANGEET : 9 pm - 10pm

**29 SEPTEMBER, 2009 (TUESDAY)**

YOGA AND MEDITATION : 6 am - 6.30 am
FLAG HOISTING CEREMONY : 6.30am - 7 am
YAJNA : 7am - 8 am
BREAKFAST : 8am - 9 am

**YOUTH SAMMELAN** : 9am - 10.30 am
***THEME : YOUTH PARTICIPATION IN ADULT PROGRAMS: ARE YOUTH TAKEN SERIOUSLY OR NOT, HOW TO CONVINCE ADULTS***

**SAMMELAN** : 11 am - 1pm
***THEME: GENDER DISCRIMINATION: IS IT A MINOR PROBLEM OR SUBSTANTIAL, WHO IS TO BE BLAMED (3RD MILLENNIUM DEVELOPMENT GOAL)***
LUNCH : 1.30pm - 2.30pm

**SAMMELAN** : 2pm - 4.30pm
***THEME: ETHICS IN BUSINESS: IS IT POSSIBLE TO BENEFIT WITHOUT BEING FRAUD, PAYING BRIBES ETC. (8TH MILLENNIUM DEVELOPMENT GOAL)***
BHAJAN KIRTAN AND TEA BREAK : 4.30pm - 5pm

**80TH ANNIVERSARY OF ARYA DEWAKER SURINAME :** 6.30pm - 10pm
***YAJNA AND PRAWACHAN, COURTESY AWARD, PRESENTATION/ CLOSING REMARKS, VOTE OF THANKS, WORLD PEACE PRAYER, GROUP SONG***

### शोक समाचार

## श्री ओमलाल आर्य का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के कर्मठ ढोलकवादक श्री ओमलाल आर्य का दिनांक 2 जुलाई, 09 को एक दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो गया। वे प्रचार कार्य से शाहजहानपुर जा रहे थे। उनका अन्तिम संस्कार स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में वैदिक रीत्यानुसार किया गया। उनकी स्मृति में आर्यसमाज कुठिला जिला हरदोई में शोकसभा आयोजित की गई। जिसमें प्रदेश की अनेक आर्यसमाजों के सदस्यों ने उपस्थित होकर उन्हें अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। –सम्पादक**

**स्वामी अग्निवेश द्वारा समलैंगिकता का समर्थन :**

# हद हो गई अब तो : स्वामी अग्निवेश ने किया भारत सरकार से हाईकोर्ट के फैसले की अपील न करने का अनुरोध

माननीय दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा भारतीय संविधान की धारा 377 में वर्णित समलैंगिकता को आपराधिक क्रिया न मानने का जो निर्णय लिया गया उसका प्रत्येक सभ्य, शिष्ट एवं भारतीय संस्कृति में श्रद्धा रखने वाले व्यक्ति ने पुरजोर विरोध किया। आर्य समाज ने भी विभिन्न मंचों के माध्यम से अथवा अन्य संगठनों के साथ मिलकर अपनी आवाज उठाई। और इस विकृत मानसिकता को समर्थन देने वाले निर्णय पर अपनी स्पष्ट असहमति जताई। लेकिन इसे दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि आर्यसमाज की सर्वोच्च सभा के तथाकथित एवं स्वयंभू प्रधान के रूप में अपने आपको घोषित करवाने का प्रयास करने वाले स्वामी अग्निवेश जैसे व्यक्तित्व ने न केवल इस निर्णय पर प्रसन्नता जाहिर की और जजों का इस निर्णय के लिए धन्यवाद किया बल्कि उसे वैदिक संस्कृति एवं वैदिक मान्यताओं से भी जोड़ने से नहीं चके। उनकी इस करतूत से सम्पूर्ण आर्य जगत् जैसे जीते जी ही मरने को विवश हो उठा। मीडिया के आकर्षण के सदैव ही भूखे रहे 'स्वामी अग्निवेश' को तो तलाश ही इस प्रकार के निर्णयों की रहती है, जहाँ वो "लीक से हटकर" बात कहकर सस्ती लोकप्रियता बटोर सकें। और अपने आप को बुद्धिजीवी कहलाने का दम्भ भर सकें। इसका उदाहरण दिनांक 20 जुलाई 2009 के अंग्रेजी पत्र 'हिन्दुस्तान टाईम्स' का एक लेख है। जिसमें अग्निवेश संयुक्त लेखक हैं। वह लेख और उसका हिन्दी रूपान्तरण पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हैं, जिससे कि पाठक स्वयं अनुमान लगा सकें कि तथाकथित स्वामी अग्निवेश जी की किस प्रकार की सोच है। और वे किस प्रकार एन.डी.टी.वी. में दिये अपने इन्टरव्यू (जिसमें उन्होंने समलैंगिकता का समर्थन करते हुए महर्षि दयानन्द, सत्यार्थ प्रकाश एवं मनुस्मृति आदि ग्रन्थों का हवाला देकर महापाप किया) की बात को आर्य जनता के पूर्ण विरोध के बावजूद भी निरन्तर आगे बढ़ा रहे हैं। और सभी आर्यों की भावनाओं की खिल्ली उड़ा रहे हैं। ऐसे व्यक्ति को आर्यसमाज का नेता तो क्या, एक सामान्य सदस्य मानने में भी आर्यों को शर्म आ रही है। ईश्वर उन्हें सद्बुद्धि प्रदान करें।

*कहते हैं कि कभी किसी गलत बात पर कोई व्यक्ति अपना समर्थन व्यक्त कर दे, तो समाज की भावना को देखते हुए अपने वक्तव्य से पीछे हट जाता है, या उसकी सफाई यूं देने लगता है कि 'मेरा अर्थ यह नहीं था' – 'मेरा मन्तव्य यह नहीं था', आदि–आदि। किन्तु हद हो गई तब जब स्वामी अग्निवेश ने आर्यसमाज की सारी भावनाओं का बेहतरी से पता लगने के बावजूद हद दर्जे से 'दो समलैंगिक वयस्कों के शारीरिक सम्बन्ध बनाने' को वैध करार देने के लिए लगातार समर्थन करते चले जा रहे हैं। और अब वे न केवल समर्थन करते चले जा रहे हैं बल्कि भारत सरकार से यह निवेदन भी करने के लिए जुट गए हैं कि वे हाई कोर्ट द्वारा दिए गए निर्णय को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती न दें। उनके तथा अन्य तीन लोगों के हस्ताक्षरों से भारत सरकार तथा भारत के सभी नागरिकों से अपील का एक पत्र दिनांक 20 जुलाई, 2009 के हिन्दुस्तान टाइम्स में प्रकाशित किया गया है। जिसमें उन्होंने दिल्ली हाईकोर्ट का निर्णय आने के पश्चात् भारत सरकार से अपील की है कि सरकार हाईकोर्ट के निर्णय के विरोध में कोई अपील आदि न करे। साथ ही यह भी लिखा है कि ऐसे ऐतिहासिक फैसले की तो उन्हें चिरप्रतीक्षा थी।* ***हद हो गई यह तो।*** *सभी सीमाएं पार करके संन्यासी वस्त्रों का अपमान करना – कम से कम खुद के नाम से ही कह लो, पर स्वामी दयानन्द, वेद, वैदिक धर्म, आर्यसमाज, वैदिक सभ्यता, वैदिक संस्कृति, आदि शब्दों की गरिमा को तो इस नीच कार्य से न जोड़ो। प्रस्तुत टिप्पणी हिन्दुस्तान टाइम्स में प्रकाशित उस पत्र पर हुई है, जो दिनांक 20 जुलाई, 2009 में प्रकाशित हुआ है। उसकी हू–ब–हू प्रति भी हिन्दी अनुवाद के साथ यहां प्रकाशित की गई है। – सम्पादक*

**open letter**

**To the Government of India and all citizens,**

It's been three years since we launched an Open Letter seeking an end to the colonial law that criminalised consensual sexual acts between adults of the same sex. Over 150 of India's most eminent people became signatories to that letter. All lead signatories have welcomed the Delhi High Court judgement, reading down Section 377 of the Indian Penal Code to decriminalise private, consensual sexual act between adults. With this judgement, India has moved closer to the national goal of becoming a just, pluralistic and democratic society.

We note with regret, however, that those who oppose the judgement have often done so on bigoted grounds. Overlooking Dr Ambedkar's vision of constitutional morality and Pandit Nehru's vision of equality and inclusiveness, they have fanned homophobia by resorting to calling sexual minorities evil, bestial and a threat to traditional Indian values and morals. The result has been an upsurge in threats and assaults against sexual minorities since the judgement, which now awaits the scrutiny of the Supreme Court of India.

We urge the government to stand by the HC judgement and to, at the very least, refrain from asking for an 'interim stay' of the HC judgement, which would mean that the law will revert without full consideration of the judgement to the reprehensible pre-judgement position.

*Vikram Seth, Swami Agnivesh, Soli Sorabjee, Siddharth Dube and others*

**समलैंगिकता के समर्थन पर स्वामी अग्निवेश द्वारा NDTV को दिए इन्टरव्यू की रिकार्डेड सी.डी. सभा कार्यालय में उपलब्ध।**

उपरोक्त अंग्रेजी समाचार का हिन्दी अनुवाद

## खुला पत्र
## भारत सरकार एवं सभी नागरिकों की सेवा में

यह तीन वर्ष पुरानी बात है जब हमने खुले पत्र के माध्यम से उस ब्रिटिश कानून को समाप्त करने की वकालत की थी, जिसमें परस्पर सहमति से समलैंगिकता, शारीरिक सम्बन्ध बनाने को अपराध की श्रेणी में माना जाता है। लगभग 150 भारतीय बुद्धिजीवियों ने उस पर हस्ताक्षर किये थे। उन सभी लोगों ने उच्च न्यायालय द्वारा उस धारा को समाप्त करने के अनुमोदन का स्वागत किया है। इस निर्णय से भारत एक न्याययुक्त, बहुसामाजिक और लोकतंत्र बनने के राष्ट्रीय लक्ष्य के निकट पहुँच गया है।

हमें खेद है जो इस निर्णय का विरोध कर रहे हैं, वो अपनी धर्मान्धता के कारण पहले भी प्रायः ऐसा करते रहे हैं। डॉ. अम्बेडकर के संवैधानिक नैतिकता एवं पं. नेहरु के समानता व समग्रता के स्वप्न को अनदेखा करते हुए इन्होंने इन अल्पमत समलैंगिकों को दुष्ट और पशु समान कहा और भारतीय मूल्यों के प्रति आघात कहा। परिणाम स्वरूप इस निर्णय के बाद से ही समलैंगिकों को धमकी, मारपीट का सामना करना पड़ रहा है। यह निर्णय अब सर्वोच्च न्यायालय द्वारा जाँच किया जाना है। (दिनांक 20.07.09 को सर्वोच्च न्यायालय ने सरकार से बात–चीत करने तक उच्च न्यायालय के निर्णय को ही बरकरार रखा है।)

हम सरकार से प्रर्थाना करते हैं कि वह उच्च न्यायालय के निर्णय को बरकरार रखें और कम से कम अन्तरिम स्टे मांगने से बचे, अन्यथा यही दुष्ट कानून पुनः अपने पूर्व रूप में स्थापित हो जायेगा।

*– विक्रम सेठ, स्वामी अग्निवेश, सोली सोहराबजी, सिद्धार्थ दुबे एवं अन्य।*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य

## महाराष्ट्र में एक माह के वेद प्रचार पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य जी एक मास की विशेष वेद प्रचार हेतु महाराष्ट्र की यात्रा पर हैं। महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा ने महर्षि दयानन्द के 125वें निर्वाण वर्ष के उपलक्ष्य में मुख्य शहरों, गांवों व कस्बों में वेद प्रचार करने की योजना बनाई है जिसका शुभारम्भ जुलाई में शोलापुर से हो रहा है। प्रचार में आम जनता तक महर्षि दयानन्द की मान्यताओं को पहुंचाना तथा उनके साहित्य को जन–जन तक पहुंचाने की प्रेरणा देना प्रमुख कार्य रहेगा। इसमें महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी श्रद्धानन्द जी, मन्त्री श्री शिवमुनि जी तथा सभा के अनन्य कार्यकर्ता सार्वदेशिक सभा के अन्तरंग सदस्य डॉ. ब्रह्ममुनि जी का विशेष योगदान है। सभा का प्रयास है कि मराठी भाषा में अधिक से अधिक आर्य साहित्य का प्रकाशन हो तथा आम जनता तक पहुंचे।

**आर्यसमाज एल ब्लाक, हरिनगर नई दिल्ली–110064 में**
**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के साहित्य प्रचार की शाखा आरम्भ**

आर्यसमाज एल ब्लाक, आनन्द विहार हरि नगर, नई दिल्ली में सभा के बिक्री विभाग की एक शाखा के रूप में वैदिक साहित्य प्रचार एवं बिक्री केन्द्र की स्थापना की गई है। इस केन्द्र पर हवन सामग्री, महर्षि दयानन्द कॉमिक्स, शगुन लिफाफे, वैदिक सत्संग गुटका, वेदों के सैट, सत्यार्थ प्रकाश तथा अन्य महर्षि दयानन्दकृत सत्साहित्य प्रचारार्थ बिक्री हेतु उपलब्ध है।

*– वी. के. मल्होत्रा, 9213191691* *कुंवरपाल शास्त्री, 9810134431*

❖ साप्ताहिक आर्य सन्देश ❖

20 जुलाई, 2009 से 26 जुलाई 2009

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं० डी.एल.( एन.डी. )-११/६०७१/२००९-२०११

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक २३/२४-०७-२००९

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०( सी० ) १३९/२००९-११

आर. एन. नं. ३२३८७/७७

प्रतिष्ठा में,

## विद्यार्थियों के लिए विशेष योजना

# विद्यालयों के बच्चों को पढ़ाइए महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र

## आपके बच्चों को मिल सकते हैं

## 5,00,000 रु० तक के इनाम

**भारत में कहीं भी 500 से अधिक प्रतियां मंगाने पर कोई डाक व्यय नहीं**

**योजना केवल 31 अगस्त, 09 तक मान्य**

**दिल्ली सभा कार्यालय – 15, हनुमान रोड नई दिल्ली : मूल्य मात्र 12/–**

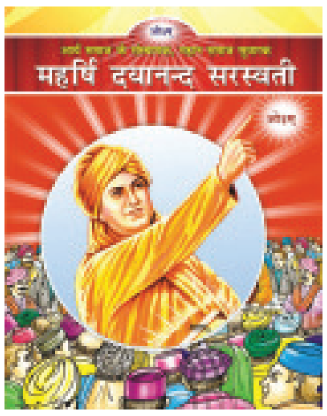


विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने एवं परिवार के साथ जोड़ने के लिए तैयार कराई गई है कॉमिक्स। ये कॉमिक्स हिन्दी में तैयार कराई गई हैं।

महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र को बच्चों तक पहुंचाने के लिए यह एक सुविचारित योजना है। इनको बच्चों तक पहुंचाने के लिए कुछ सुझाव निम्न हैं :–

1. आर्यसमाज के आयोजनों पर बच्चों को निःशुल्क वितरण करें। 2. निकटवर्ती विद्यालयों में जाकर इस योजना के बारे मे बताएं तथा उन्हें खरीदने के लिए प्रेरित करें। 3. अपने पारिवारिक उत्सवों के अवसर पर जैसे – बच्चों का जन्मदिन, विवाह, वर्षगांठ के अवसर पर आने वाले बच्चों को भेंट करें। 4. बच्चों की प्रतियोगिताएं आयोजित करवाकर पुरस्कार के रूप में इनका वितरण करें। 5. जो आर्यसमाज के विद्यालय संचालित कर रहे हैं, वे प्रत्येक बच्चे तक इस कॉमिक्स को अवश्य ही पहुंचाएं। 6. सैम्पल मंगाने के लिए आज ही लिखें। सैम्पल वीपीपी द्वारा भेजे जाएंगे। मूल्य : 12 रुपये मात्र

### विशेष नोट :

आवश्यक नहीं कि इनामों के लिए प्रविष्टियां अलग–अलग भेजी जाएं। आप चाहें तो कई प्रविष्टियां एक साथ भेज सकते हैं।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली-2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड नई दिल्ली-१; दूरभाष : २३३६०१५०; टैलीफैक्स २३३६५९५९; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र० राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : डॉ० ओमप्रकाश भटनागर